दुर्गा कवच

(भाषा टीका सहित)

जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

श्री दुर्गा कवच

माँ दुर्गा जी के सिद्ध स्तोत्र

और उनके फल भाषा टीका सहित

सृष्टि की पालक और संहारक एक मात्र शक्ति ही महामाया 'दुर्गा' के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी रची संपूर्ण सृष्टि में यदि ध्यान से देखें तो जीवनरक्षक वृक्ष, वनस्पति, घास, फूस, फूल, तृण, ताड़, समुद्र, नदियां आदि सबमें हरे रंग की ही प्रधानता दिखाई देती है। वैज्ञानिकों ने भी हरा रंग मन को प्रसन्न व प्रफुल्लता देने वाला माना है। मां दुर्गा वैसे भी अपने बच्चों को खुशियां और हरा-भरा संसार प्रदान करने को सदैव तत्पर रहती है। अत: हरे रंग से छपे इस 'दुर्गा कवच' का तांत्रिक प्रभाव कई गुना अधिक है। क्योंकि तंत्र की अधिष्ठात्री देवी 'दुर्गा' अर्थात्दुर्गम को भी जीतने वाली है।

संपादक – शरदगर्ग एम.ए.

प्रकाशक

मा न स प्र का स न

मानस मन्दिर, देशबंधु गुप्ता मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

फोन : (दु) 25726458, (नि.) 25738043

जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

मानस प्रकाशन

मानस मन्दिर, देशबंधु गुप्ता मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

फोन : (दु) 25726458, (नि.) 25738043

मुद्रक : एम.एस. प्रिंटर्स दिल्ली

आवरण मुद्रक : यूनीक इण्डिया प्रा. लि. दिल्ली

सर्वाधिकार © प्रकाशकाधीन

मूल्य : 15-00

जो सज्जन धर्म प्रचार के लिए धार्मिक पुस्तकें बांटना चाहें, वे प्रकाशक से सम्पर्क करें उन्हें पुस्तकें लागत मात्र मूल्य पर दी जाएगी।

प्रकाशक

DURGA— KAWACH TEEKA

जय माता दी जय माता दी जय माता दी जय माता दी

प्रभावशाली तांत्रिक दुर्गा यन्त्र

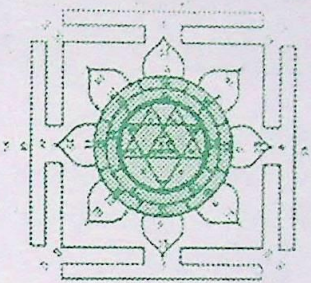

तांत्रिक पूजन विधान

सर्वप्रथम स्नान करके दुर्गा माता की मूर्ति तथा इस पुस्तक में अंकित मंत्र को ताम्रपत्र पर खुदवाकर अपने सामने रखें। रोली, कुंकुम, अक्षत, लाल पुष्प (गुलाब विशेष प्रिय), धूप, दीप आदि से पूजन करें तथा यथा शक्ति हलुवा चना या कच्चे दूध और खोये की मिठाई का भोग लगावें। पुष्प हाथ में लेकर नीचे लिखा श्लोक पढ़ें :-

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

पुष्प अर्पण करें फिर चालीसा का पाठ करें। पाठ के अन्त में "ॐ ही दुन्दुर्गायै नमः" इसमंख का 108 बार तुलसी या सफेद चन्दन की माला से जाप करें।

दुर्गा जी के 108 नाम

1. सती, 2. साध्वी, 3. भवप्रीता, 4. भवानी, 5. भवमोचनी, 6. आर्या, 7. दुर्गा, 8. जया, 9. आद्या, 10. त्रिनेत्रा, 11. शूलधारिणी, 12. पिनधारिणी, 13. चित्रा, 14. चन्द्रघंटा, 15. महातपा, 16. मनः, 17. बुद्धि, 18. अहंकारा, 19. चित्तरूपा, 20. चिता, 21. चिति, 22. सर्वमंत्रमयी, 23. सत्ता, 24. सत्यानन्दस्वरूपिणी, 25. अनन्ता, 26. भाविनी, 27 भाव्या, 28 भव्या, 29. अभव्या, 30. सदागति, 31. शाम्भवी, 32. देवमाता, 33. चिन्ता, 34. रत्नप्रिया, 35. सर्वविद्या, 36. दक्षकन्या, 37. दक्षयज्ञ, विनाशिनी, 38. अपर्णा, 39. अनेकवर्णा, 40. पाटला, 41. पाटलावती, 42. पट्टाम्बरपरीधाना, 43. कलम-जीररंजिनी, 44. अमेयविक्रमा, 45. क्रूरा, 46. सुन्दरी, 47. सुरसुन्दरी, 48. वनदुर्गा, 49. मातंगी, 50. मतङ्गमुनिपूजिता, 51. ब्राह्मी, 52. माहेश्वरी, 53. ऐन्द्री, 54. कौमारी, 55. वैष्णवी, 56. चामुण्डा, 57. वाराही, 58. लक्ष्मी, 59. पुरूषाकृति, 60. विमला, 61. उत्कर्षिणी, 62. ज्ञाना, 63. क्रिया, 64.

नित्या, 65. बुद्धिदा, 66. बहुला, 67. बहुलप्रेमा, 68. सर्ववाहन-वाहना, 69. निशुम्भ-शुम्भहननी, 70. महिषासुर-मर्दिनी, 71. मधु-कैटभहन्त्री, 72. चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी, 73. सर्वासुरविनाशा, 74. सर्वदानवघातिनी, 75. सर्वशास्त्रमयी, 76. सत्या, 77. सर्वास्त्रधारिणी, 78. अनेकशस्त्रहस्ता, 79. अनेकास्त्रधारिणी, 80. कुमारी, 81. एककन्या, 82. कैशारी, 83. युवती, 84. यति, 85. अप्रौढ़ा, 86. प्रौढ़ा, 87.वृद्धमाता, 88. बलप्रदा, 89. महोदरी, 90. मुक्तकेशी, 91. घोररूपा, 92. महाबला, 93. अग्निज्वाला, 94. रौद्रमुखी, 95. कालरात्रि, 96. तपस्विनी, 97. नारायणी, 98. भद्रकाली, 99. विष्णुमाया, 100. जलोदरी, 101. शिवदूती, 102. कराली, 103. अनन्ता, 104. परमेश्वरी, 105. कात्यायनी, 106. सावित्री, 107. प्रत्यक्षा, 108. ब्रह्मवादिनी।

निवेदन

आज के युग में दुख दूर करने वाली श्री दुर्गा जी का प्रचार हिन्दू समाज में सच्चे तन-मन से जितना भी किया जाए वह कम है। सर्वव्यापी महामाया भगवती ही संकट में घिरे सभी लोगों के लिए संभव नहीं है. अत: वह दुर्गा कवच के पाठ से ही इसका फल प्राप्त कर सकता है। इसके पाठ

को श्रद्धापूर्वक करने से प्राणी की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। महामाया के सभी सिद्ध स्तोत्रों का पाठ फल नीचे लिखे अनुसार है :-

1. वाराह पुराण के अनुसार श्री दुर्गा कवच के पाठ का फल – यह कवच तेज को बढ़ाने वाला और महान है। जो व्यक्ति इस कवच का पाठ करता है वह कीर्ति से विभूषित संसार में यश से अभ्युदय पाता है। जब तक पर्वत, वन आदि से विभूषित ये भूमण्डल रहेगा (अथवा शेषनाग जब तक इसे धारण किए रहेंगे) तब तक कवच का पाठ करने वाले व्यक्ति के पुत्र-पौत्र आदि सन्ततियां स्थिर रहती है। मरने के बाद उस महामाया की कृपा से जो देवताओं को भी दुर्लभ स्थान है। उस नित्य (अनश्वर) स्थान को मनुष्य प्राप्त करता है। उस उत्तम स्थान को प्राप्त कर वह प्राणी शिवजी के साथ आनन्द पूर्वक निवास करता है।

2. अर्गला स्तोत्र के पाठ का फल – जो लोग अर्गला स्तोत्र का नित्य पाठ करते हैं वह उत्तम फल को प्राप्त करेंगे, और इस जन्म में प्रचुर धनराशि भगवती की दया से उन्हें प्राप्त होगी।

3. कीलक स्तोत्र के पाठ का फल– इस स्तोत्र का मन्द स्वर से उच्चारण कर पाठ करने से स्वल्प सम्पत्ति की प्राप्ति होती है किन्तु उच्च स्वर से पाठ करने पर सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। अत: उच्च स्वर में ही इसका पाठ करना चाहिए। जिस महामाया की कृपा से मनुष्य को ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, शत्रु नाश तथा मोक्ष मिलता है। उस जगदम्बा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करता?

4. रात्रि सूक्त के पाठ का फल– निद्रा में जिन मनुष्यों को भयावह स्वप्न दीखते हैं। वह इस सूक्त का पाठ करें तो भगवती निद्रास्वरूपिणी, मधु-कैटभ के वध के लिए भगवान विष्णु को जगाने वाली, राक्षसों का वध करने की बुद्धि उत्पन्न करने वाली, स्वयं रक्षा करती है।

5. देवी सूक्त के पाठ का फल– भक्ति पूर्वक पाठ किए जाने पर देवी अपने भक्तों के संकट को तत्क्षण दूर करती है और समस्त संकटों के हरण के वास्ते इस देवी सूक्त का पाठ होता है।

6. दुर्गाअष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पाठ फल– भगवान शंकर ने गोरोचन से लिखकर इस दुर्गा यंत्र को भुजा में धारण किया था। इस यंत्र को शतभिषा नक्षत्र वाली सोमावती अमावस के दिन रात्रि में लिखकर जो इस स्तोत्र का पाठ करेगा उसे समस्त संपत्तियां प्राप्त होंगी।

7. सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के पाठ का फल– इस कुंजिका स्तोत्र के पाठ से ही सप्तशती के समस्य मन्त्र सिद्ध होते हैं। इस गुप्त स्तोत्र को अश्रद्धालु जनों को नहीं बताना चाहिए। रूद्रयामल तंत्र में शिव पार्वती सम्वाद के रूप में इस स्तोत्र का वर्णन है।

8. दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम माला के पाठ का फल– भगवान शंकर ने कहा कि हे पार्वती! जो मनुष्य मेरे द्वारा वर्णित भगवती दुर्गा के इन बत्तीस नामों की माला का नित्य पाठ करता है वह प्राणी निस्सन्देह सब भयों से मुक्त रहता है।

–संपादक

★★★

अनुक्रमणिका

1. श्री दुर्गा कवचम् 9
2. श्री अर्गला स्तोत्रम् 23
3. श्री कीलक स्तोत्रम् 29
4. श्री रात्रि सूक्तम् 33
5. श्री देवी सूक्तम् 37
6. श्री दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् 44
7. श्री सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम माला 49
8. श्री दुर्गा द्वात्रिशन्नाम माला 53
9. देवी प्रार्थना 55
10. सम्पुट मंत्र 56
11. श्री दुर्गा चालीसा 57
12. आरती 61

श्री दुर्गा कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्द, चामुण्डा देवता, अंगन्यासोक्त मातरो बीजम, दिग्बन्ध देवता स्तत्वम्, श्रीजगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठागंत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षकरं नृपाणाम्,
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह!।1।

मार्कण्डेय जी ने कहा- हे पितामह ! जो साधन संसार में अत्यंत गोपनीय हैं, जिससे मनुष्य मात्र की रक्षा होती है तथा आपने अब तक जिसे किसी से भी प्रकट नहीं किया है, वह साधन मुझे बताइए । । ।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र ! सर्वभूतोपकारकम्,
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने!।2।

ब्रह्मा जी ने कहा- हे ब्राह्मण ! सम्पूर्ण प्राणियों का

कल्याण करने वाला देवों का कवच (रक्षा के लिए पहने जाने वाले एक विशेष प्रकार के पहनावे को कवच कहते हैं। इसी तरह यह स्तोत्र भी है, इसके पाठ से साधक सर्वथा सुरक्षित रहता है।) अत्यंत गोपनीय है, हे महामुने! उसे सुनिए। 2।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी,
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम ।3।

हे मुने! दुर्गा की नव शक्तियां-पहली शक्ति का नाम शैलपुत्री (हिमालय कन्या पार्वती) है, दूसरी शक्ति का नाम ब्रह्मचारिणी (परब्रह्म परमात्मा को साक्षात कराने वाली), तीसरी शक्ति चन्द्रघण्टा (चन्द्रमा जिसकी घण्टा में हो) है। चौथी शक्ति कूष्माण्डा (सारा संसार जिनके उदर में निवास करता हो) है। 3।

पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च,
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाऽष्टमम् ।4।

पांचवीं शक्ति स्कन्दमाता (कार्तिकेय की जननी) है। छठी शक्ति कात्यायनी (महर्षि कात्यायन के अप्रतिभ तेज से उत्पन्न होने वाली) है, सातवीं शक्ति कालरात्रि (समस्त सृष्टि का संहार करने वाली) तथा आठवीं शक्ति महागौरी (शिव के महाकाली कहने पर क्रोध से जिन्होंने तपस्या कर ब्रह्मदेव से गौर वर्ण का वरदान लेने वाली) है। 4।

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः,
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।5।

नवीं शक्ति सिद्धिदात्री (समस्त जगत को 1. अणिमा, 2. लघिमा, 3. प्राप्ति, 4. प्राकाम्य, 5. महिमा, 6. ईशित्व, 7. वशित्व, 8. कामावसायिता- इस आठ रुपों से सिद्धि देने वाली) हैं। ये नवदुर्गा कहीं गई हैं। ये शक्तियां सर्वज्ञ ब्रह्मदेव द्वारा कही गई हैं । 5 ।

अग्निना दसमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे,
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ।6।

जो मनुष्य अग्नि में जल रहा हो, युद्ध भूमि में शत्रुओं से घिर गया हो, तथा अत्यन्त कठिन विपत्ति में फंस गया हो, वह यदि भगवती दुर्गा की शरण का सहारा ले ले ।6।

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे,
नापदं तस्य तैश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि ।7।

तो इसका कभी युद्ध या संकट में कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, उसे कोई विपत्ति घेर नहीं सकती न उसे शोक, दुःख तथा भय की प्राप्ति ही हो सकती है । 7 ।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते,
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि! रक्षसे तान्न संशयः ।8।

जो लोग भक्तिपूर्वक भगवती का स्मरण करते हैं, उनका अभ्युदय होता रहता है। हे भगवती! जो लोग तुम्हारा स्मरण

करते हैं, निश्चय ही तुम उनकी रक्षा करती हो । 8 ।

प्रेतसंथातु चामुण्डा वाराही महिषासना,
ऐन्द्री गजसमारूढ़ा वैष्णवी गरुड़ासना ।9।

प्रथमा चामुण्डा (चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली) देवी प्रेत के वाहन पर निवास करती है, वाराही महिष के आसन पर रहती हैं, ऐन्द्री का वाहन ऐरावत हाथी है, वैष्णवी का वाहन गरुड़ है । 9 ।

माहेश्वरी वृषारूढ़ा कौमारी शिखिवाहना,
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ।10।

माहेश्वरी बैल के वाहन पर तथा कौमारी मोर के आसन पर विराजमान हैं। श्री विष्णुपत्नी-भगवती के हाथों में कमल है तथा वे कमल के आसन पर निवास करती हैं ।10 ।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना,
ब्राह्मी हंससमारूढ़ा सर्वाभरण-भूषिता ।11।

श्वेतवर्ण वाली ईश्वरी वृक्ष-बैल पर सवार हैं, भगवती ब्रह्माणी (सरस्वती) सम्पूर्ण आभूषणों से युक्त हैं तथा वे हंसासन पर विराजमान रहती हैं । 11 ।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः,
नानाभरण-शोभाढया नानारत्नोपशोभिताः ।12।

अनेक आभूषण तथा रत्नों से देदीप्यमान उपर्युक्त सभी देवियां सभीयोग शक्तियों से युक्त हैं । 12 ।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः,
शङ्खंचक्रंगदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् । 13।

इनके अतिरिक्त और भी देवियां हैं, जो दैत्यों के विनाश के लिए तथा भक्तों की रक्षा के लिए क्रोधयुक्त होकर रथ में सवार रहती हैं तथा इनके हाथों में शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, मूसल । 13 ।

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च,
कुन्तायुद्धं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् । 14।

खेटक, तोमर, परशु (फरसा), पाश (बांधने वाला विशेष प्रकार का अस्त्र), भाला, त्रिशूल तथा उत्तम शार्ङ्ग धनुष आदि अस्त्र-शस्त्र विराजमान हैं । 14 ।

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च,
धारयन्त्यायुधानीत्थ देवानां च हिताय वै । 15।

जिससे देवताओं की रक्षा होती है तथा देवी जिन्हें दैत्यों की देह नाश तथा भक्तों के मन से भय नाश के लिए धारण करती हैं । 15 ।

गमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर-पराक्रमे,
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि । 16।

महाभय का विनाश करने वाली, महान्बल, महाघोर क्रम तथा महानउत्साह से सुसम्पन्न हे महारौद्रे ! (महारुद्र

की शक्ति) तुम्हें नमस्कार है । ।16 ।

त्राहि मां देवि ! दुत्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि,
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।17।

हे शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली देवी ! तुम मेरी रक्षा करो। दुर्घर्ष तेज के कारण मैं तुम्हारी ओर देख भी नहीं सकता। ऐन्द्री शक्ति पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करे तथा अग्नि देवता की आग्निकोण में हमारी रक्षा करे । ।17 ।

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्वां खड्गधारिणी,
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।18।

वाराही शक्ति दक्षिण दिशा में, खड्गधारिणी नैऋत्य कोण में, वारुणी शक्ति पश्चिम दिशा में तथा मृग के ऊपर सवार रहने वाली शक्ति वायव्य कोण में हमारी रक्षा करे । ।18 ।

उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी,
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेद धस्ताद् वैष्णवी तथा ।19।

भगवान कार्तिकेय की शक्ति कौमारी उत्तर दिशा में, शूल धारण करने वाली ईश्वरी शक्ति ईशान कोण में, ब्रह्माणी ऊपर तथा वैष्णवी शक्ति नीचे हमारी रक्षा करे । ।19 ।

एवं दश दशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना,
जया में चाऽग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।20।

इसी प्रकार शव के ऊपर विराजमान चामुण्डा देवी दसों दिशा में हमारी रक्षा करें। आगे जया, पीछे विजया हमारी रक्षा करें । 20 ।

अजिता बामपार्श्वे तु दक्षिणे चाऽपराजिता,
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।21।

बायें भाग में अजिता, दाहिने भाग में अपराजिता, शिखा में उद्योतिनी तथा शिर में उमा नियमपूर्वक हमारी रक्षा करें । 21 ।

मालाधरी ललाटे च भ्रूवौ रक्षेद् यशस्विनी,
त्रिनेत्रा च भ्रूवोर्मध्ये यमघण्टा न नासिके ।22।

ललाट में मालाधरी, दोनों भ्रू में यशस्विनी, भ्रू के मध्य में त्रिनेत्रा तथा नासिका में यमघंटा हमारी रक्षा करें । 22 ।

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी,
कपोलो कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी ।23।

दोनों नेत्रों के बीच में शङ्खिनी, दोनों कान के मध्य में द्वारवासिनी, कपाल में कालिका, कर्ण के मूल भाग में शांङ्करी हमारी रक्षा करें । 23 ।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका,
अधरे चाऽमृतकला जिह्वायां च सरस्वती ।24।

नासिका के बीच का भाग सुगन्धा, ओष्ठ में चर्चिका,

अधर (ओठ) में अमृतकला तथा जिह्वा में सरस्वती हमारी रक्षा करें । 24 ।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये च चण्डिका,
घण्टिका चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।25।

कौमारी दांतों की, चण्डिका कण्ठ-प्रदेश की, चित्रघण्टा गले की तथा महामाया तालु की रखा करें । 25 ।

कामाक्षा चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमंगला,
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ।26।

कामाक्षी ठोढ़ी की सर्वमंगला वाणी की, भद्रकाली ग्रीवा की तथा धनुष को धारण करने वाली रीढ़ प्रदेश की रक्षा करें । 26 ।

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी,
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ।27।

कण्ठ से बाहर नीलग्रीवाऔर कण्ठ की नली में नलकूवरी दोनों कंधों की खड्गिनी तथा वज्र को धारण करने वाली दोनों बाहु की रक्षा करें । 27 ।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गु लीषु च,
लखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी ।28।

दोनों हाथ में दण्ड को धारण करने वाली तथा अम्बिका अंगुलियों में हमारी रक्षा करें। शूलेश्वरी नखों की तथा

कुलेश्वरी कुक्षिप्रदेश में स्थित होकर हमारी रक्षा करें ।28 ।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक-विनाशिनी,
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ।29।

महादेवी दोनों स्तन की, शोक के नाश करने वाली मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय में तथा त्रिशूलधारिणी उत्तर प्रदेश में स्थित होकर रक्षा करें । 29 ।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा,
पूतना कामिका मेढं गुदे महिषवाहिनी ।30।

नाभि में कामिनी तथा गुहा भाग में गुह्येश्वरी हमारी रक्षा करें। कामिका तथा पूतना लिंग की तथा महिषवाहिनी गुदा में हमारी रक्षा करें । 30 ।

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी,
जंघे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी ।31।

भगवती कटि प्रदेश में तथा विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करें। सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाली महाबला जांघों (घुटनों के नीचे का भाग) की रक्षा करें । 31 ।

गुल्फयोनरिसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी,
पादांगुलीषु श्री रक्षेत् पादाऽधः स्थलवासिनी ।32।

नारसिंही दोनों पैर के घुट्टियों की, तेजसी देवी दोनों पैर के पिछले भाग की, श्रीदेवी पैर की अंगुलियों की तथा तलवासिनी पैर के निचले भाग की रक्षा करें । 32 ।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी,
रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ।33।

दंष्ट्राकराली (अपनी दाढ़ों के कारण भयंकर दिखाई देने वाली) नखों की, ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों को, कावेरी (कुबेर की शक्ति) रोमावली के छिद्रों में तथा वागीश्वरी हमारी त्वचा (शरीर के ऊपरी भाग का चमड़ा) की रक्षा करें । 33 ।

रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वति,
अंत्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ।34।

पार्वती देवी रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेदे की रक्षा करें। कालरात्रि आंतों की तथा मुकुटेश्वरी पित्त की रक्षा करें । 34 ।

पद्मावती पद्मकोशे कफे चुडामणिस्तथा,
ज्वालामुखी नखज्वालामसभेद्या सर्वसन्धिषु ।35।

पद्मावती (मूलाधार में स्थित) सहस्त्र दल कमल में, चूड़ामणि कफ में, ज्वालामुखी नखराशि में उत्पन्न तेज की तथा अभेद्या (जिसका किसी शस्त्र से भेदन न हो) सभी संधियों (जोड़ों) में हमारी रक्षा करें । 35 ।

शुक्रं ब्रह्माणिमे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा,
अहंकारं मनो बुद्धि रक्षेन् मे धर्मधारिणी। ।36।

ब्रह्माणी शुक्र की, छत्रेश्वरी छाया की, धर्म को धारण

करने वाली हमारे अहंकार, मन तथा बुद्धि की रक्षा करें । 36 ।

प्राणाऽपानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्,
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणकल्याणं च शोभना ।37।

वज्रहस्ता (वज्र को धारण करने वाली) प्राण, अपान, व्यान, उदान तथा समान वायु की, कल्याण से सुशोभित होने वाली कल्याणशोभना हमारे प्राणों की रक्षा करें । 37 ।

रसे रूपे गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी,
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ।38।

रस, रूप, गन्ध शब्द तथा स्पर्श रूप विषयों का अनुभव करते समय योगिनी तथा हमारे सत्व, रज एवं तमोगुणों की रक्षा नारायणी देवी करें । 38 ।

आयू रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी,
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ।39।

वाराही आयु की, वैष्णवी धर्म की, चक्रिणी (चक्र को धारण करने वाली) यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करें । 39 ।

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके,
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्या रक्षतु भैरवी ।40।

हे इन्द्राणी, तुम मेरे कुल की तथा हे चण्डिके, तुम हमारे पशुओं की रक्षा करो, महालक्ष्मी पुत्रों की तथा भैरवी देवी

हमारी स्त्री की रक्षा करें । 40 ।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा,
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ।41।

सुपथा (प्रशस्त मार्ग पर चलने वाली) हमारे पथ की, क्षेमकरी (कल्याण करने वाली) मार्ग की रक्षा करें। राजद्वार पर महालक्ष्मी तथा सब ओर व्याप्त रहने वाली विजया भयों से हमारी रक्षा करें । 41 ।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु,
तत्सर्वं रक्ष मे देवि! जयन्ती पापनाशिनी ।42।

हे देवि ! इसकवच में जिस स्थान की रक्षा नहीं कही गई है उस अरक्षित स्थान में (तुम्हारी शक्ति) पाप को नाश करने वाली जयन्ती देवी हमारी रक्षा करें । 42 ।

पदमेकं न गच्छेतु यदीच्छेच्छुभमात्मनः,
कवचेनावृतो नित्यं यत्रः यत्रैव गच्छति ।43।

यदि मनुष्य अपना कल्याण चाहे तो वह कवच के पाठ के बिना एक पग भी कहीं यात्रा न करे। क्योंकि कवच का पाठ करके चलने वाला मनुष्य जिस-जिस स्थान पर जाता है । 43 ।

तत्र तत्राऽर्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः,
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।44।

उसे वहां-वहां धन का लाभ होता है, और सम्पूर्ण

कामनाओं को सिद्ध करने वाली विजय की प्राप्ति होती है, वह पुरुष जिस-जिस अभीष्ट वस्तु को चाहता है वह वस्तु उसे निश्चय ही प्राप्त होती है । 44 ।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्यते भूतले पुमान्,
निर्भयो जायते मर्त्यः संङ्ग्रामेष्वपराजितः।45।

कवच का पाठ करने वाला इस पृथ्वी पर अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है, वह किसी से नहीं डरता और युद्ध में उसे कोई हरा भी नहीं सकता । 45 ।

त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनाऽऽवृतः पुमान्,
इदं तु देव्याः कवचंदेवानामपि दुर्लभम् ।46।

और तीनों लोकों में उसकी पूजा होती है। यह देवी का कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है । 46 ।

यः पठेत् प्रयतो नित्य त्रिसंध्यं श्रद्धयाऽन्वितः,
दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।47।

जो लोग तीनों संध्या में श्रद्धापूर्वक इस कवच का पाठ करते हैं, उन्हें देवीकला की प्राप्ति होती है, तीनों लोकों में उन्हें कोई जीत नहीं सकता । 47 ।

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः,
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटकादयः ।48।

उस पुरुष की अपमृत्यु नहीं होती। वह सौ से भी अधिक वर्ष तक जीवित रहता है। इस कवच का पाठ करने से लूता

(सिर में होने वाला खाज का रोग मकरी), विस्फोटक (चेचक) आदि सभी रोग नष्ट हो जाते हैं । 48 ।

स्थावरनं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चाऽपि यद्विषम्,
अभिचाराणि सर्वाणि मंत्र-यंत्राणि भूतले ।49।

स्थावर विष (कनेर, भांग, अफीम में रहने वाला), जंगम विष (सांप, बिच्छू आदि से उत्पन्न) कृत्रिम विष (अफीम, तेल आदि के संयोग से उत्पन्न) ये सभी प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं। मारण, मोहन तथा उच्चाटन आदि सभी प्रकार के किये गये अभिचार यंत्र तथा मंत्र, पृथ्वी तथा आकाश में विचरण करने वाले । 49 ।

भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चोपदेशिकाः,
सहजाः कुलजा मालाडाकिनी-शाकिनी तथा ।50।

ग्रामदेवतादि, जल में उत्पन्न होने वाले तथा उपदेश से सिद्ध होने वाले सभी प्रकार के क्षुद्र देवता आदि कवच के पाठ करने वाले मनुष्य को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं। जन्म के साथ उत्पन्न होने वाले ग्राम-देवता, कुलक्रम से उत्पन्न होने वाले कुल देवता, कण्ठमाला, डाकिनी, शाकिनी । 50 ।

अंतरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः,
ग्रह-भूत पिशाचाश्च यक्ष गंधर्व-राक्षसाः ।51।

अंतरिक्ष में विचरण करने वाली अत्यन्त भयानक बलवान

डाकिनियां, ग्रह, भूत, पिशाच । 51 ।

ब्रह्म-राक्षस-वेताला: कूष्माण्डा भैरवादय:।
नश्यन्ति दर्शनातस्य कवचे हृदि संस्थिते ।52।

ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड तथा भयानक भैरव आदि सभी अनिष्ट करने वाले जीव विशेष कवच का पाठ करने वाले पुरुष को देखते ही विनष्ट हो जाते हैं । 52 ।

मानोन्नतिर्भवद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्,
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ।53।

कवचधारी पुरुष को राजा के द्वारा सम्मान की प्राप्ति होती है। यह कवच मनुष्य के तेज की वृद्धि करने वाला है। कवच का पाठ करने वाला पुरुष इस पृथ्वी को अपनी कीर्ति से सुशोभित करता है और अपनी कीर्ति के साथ वह नित्य अभ्युदय को प्राप्त करता है । 53 ।

जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा,
यावद् भूमण्डलं धत्तेस-शैल-वनकाननम् ।54।

जो कवच का पाठ कर सप्तशती का पाठ करता है, उसकी पुत्र-पौत्रादि सन्तति पृथ्वी पर तब तक विद्यमान रहती है जब तक पहाड़, वन, कानन और कानन से युक्त यह पृथ्वी टिकी हुई है । 54 ।

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्तति: पुत्र-पौत्रिकी,

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।55।

कवच का पाठ कर दुर्गा सप्तशती का पाठ करने वाला मनुष्य मरने के बाद महामाया की कृपा से देवताओं के लिए जो अत्यंत दुर्लभ स्थान है । 55 ।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः,
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ।56।

उसे प्राप्त कर लेता है और उत्तम रूप प्राप्त कर शिवजी के साथ आनन्द पूर्वक निवास करता है । 56 ।

इति वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं
देव्याः कवचं समाप्तम । 1 ।

अर्गलास्तोत्रम्

अर्गला ब्योंड़ा को कहते हैं, यह लोहे या काठ का होता है। द्वार पर जिसके लगा देने से किवाड़ नहीं खुलते। इसी तरह इस स्तोत्र के पाठ से होता है। अर्थात् किसी प्रकार की बाहरी बाधा घर में प्रवेश नहीं कर पाती।

ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेनजपे विनियोगः। ॐ नमश्चण्डिकायै।

मार्कण्डेय उवाच

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥1॥

मार्कण्डेयजी बोले जिस जगदम्बिका का नाम जयन्ती (सबकी अपेक्षा अत्यधिक उत्कर्ष वाली), मंगला, काली,

भद्रकाल, कपालिनी (मुण्डमाला को धारण करने वाली), दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री (सबको धारण करने वाली), स्वाहा (यज्ञों को स्वीकार कर देवताओं का पोषण करने वाली) तथा स्वधा, पितरों को श्राद्ध, तर्पणादि को स्वीकार कर पोषण करने वाली है, उस भगवती को हम नमस्कार करते हैं ॥ 1 ॥

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते ॥2॥

हे चामुण्डे! (चण्ड, मुण्ड का विनाश करने वाली) तुम्हारी जय हो, प्राणियों का सन्ताप हरण करने वाली हे देवी, तुम्हारी जय हो, संहाररूपेण संसार का विनाश करने वाली हे कालरात्रि तुम्हारी जय हो ॥ 2 ॥

मधु-कैटभ विद्राावि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥3॥

मधु तथा कैटभ का विदारण करने वाली तथा ब्रह्मदेव को वरदान देने वाली हे देवी, तुम्हारी जय हो। हे भगवती, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 3 ॥

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥4॥

महिषासुर का विनाश कर भक्तों को सुख देने वाली हे देवी तुम्हें नमस्कार है। तुम मुझे रूप दो, यश दो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 4 ॥

रक्तबीजवधे देवि चण्ड-मुण्ड विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥5॥

रक्तबीज का वध करने वाली तथा चण्ड, मुण्ड का विनाश करने वाली हे देवी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 5 ॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥6॥

शुम्भ तथा निशुम्भ और धूम्राक्ष का मर्दन करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, यश दो तथा शत्रुओं का नाश करो ॥ 6 ॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥7॥

वन्दनीय चरणों वाली, सम्पूर्ण सौभाग्य को प्रदान करने वाली हे देवी, मुझे रूप दो, जय दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 7 ॥

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥8॥

अनित्य रूप तथा अचिन्त्य चरित्र वाली, शत्रुओं का विनाश करने वाली हे देवी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 8 ॥

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥9॥

हे पापों का नाश करने वाली चण्डिके देवि, जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हें नमस्कार करते हैं, उन्हें तुम रूप दो, जय और यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ 9 ॥

स्तुवद्भयो भक्तिपूर्व त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥10॥

हे व्याधियों का विनाश करने वाली चण्डिके देवि, जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करते हैं, तुम उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ 10 ॥

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥11॥

हे चण्डिके, जो लोग भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम उन्हें रूप दो, यश दो तथा उनके शत्रुओं का विनाश करो ॥ ११ ॥

देहि सौभाग्यमारोग्य देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥12॥

हे भगवती, तुम मुझे सौभाग्य तथा आरोग्य दो, मुझे अत्यन्त सुख प्रदान करो और रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 12 ॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥13॥

हे देवी, मेरे शत्रुओं का विनाश करो, मुझे बल दो, रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का नाश करो ॥ 13 ॥

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥14॥

हे देवी, मेरा कल्याण करो, मुझे विपुल सम्पत्ति दो, रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 14 ॥

सुरा-ऽसुर-शिरोरत्न-निघृष्टचरणेऽम्बिके ! ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥15॥

हे भगवती, देवताओं तथा असुरों के शिरोरत्न के नमस्कार से तुम्हारे चरण घिसते रहते हैं। अतः हे अम्बिके, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का नाश करो ॥ 15 ॥

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥16॥

हे भगवती ! तुम अपने भक्तों को विद्वान, यशस्वी तथा लक्ष्मीवान् बनाओ। तुम मुझे रूप दो, जय दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 16 ॥

प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥17॥

बड़े-बड़े उद्धत दैत्यों के घमण्ड को चूर्ण करने वाली हे चण्डिके, मुझ शरणागत को तुम रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 17 ॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त-संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥18॥

हे चार भुजा वाली, ब्रह्मदेव से स्तुति की जाने वाली, हे परमेश्वरी, तुम रूप दो, जय दो, यश दो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 18 ॥

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥19॥

हे भगवती, भगवान् विष्णु नित्य, निरंतर तुम्हारी स्तुति करते रहते हैं, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ 19 ॥

हिमाचल-सुतानाथ-संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो देहि ॥20॥

भगवान सदाशिव से स्तुति की जाने वाली हे परमेश्वरी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का विनाश करो ॥ 20 ॥

इन्द्राणी पतिसद्भाव-पूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥21॥

इन्द्र के द्वारा शुद्ध भावना से पूजी जाने वाली हे देवी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ 21 ॥

देवि प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्यदर्प-विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥22॥

अपने प्रचण्ड भुजाओं से दैत्यों के घमण्ड को चूर-चूर कर देने वाली हे देवी, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ 22 ॥

देवि भक्तजनोद्दाम-दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥23॥

अपने भक्त जन का अत्यन्त आनन्द बढ़ाने वाली हे अम्बिके, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ 23 ॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥24॥

हे भगवती ! हमारी इच्छा के अनुकूल चलने वाली सुन्दर पत्नी मुझे प्रदान करो, जो उत्तम कुल में उत्पन्न हुई हो तथा संसार रूपी सागर से पार करने वाली हो ॥ 24 ॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशतीं संख्या-वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥25॥

जो लोग इस अर्गलास्तोत्र का पाठ कर दुर्गा-सप्तशती का पाठ करते हैं, वे सप्तशती के पाठ के उत्तम फल को प्राप्त करते हैं तथा प्रचुर धनराशि भी भगवती की दया से उन्हें मिलती है ॥ 25 ॥

★ ★ ★

कीलकस्तोत्रम्

दुर्गा सप्तशती द्वारा भगवती के अत्यन्त उद्दीप्त प्रभाव को देखकर महर्षियों ने शाप से उसे कीलित कर दिया, अतः उस विघ्नरूपी कील को निवारण करने के लिए कीलक का पाठ अवश्य करना चाहिए।

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, महासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥1॥

मार्कण्डेय जी ने कहा जिस भगवान शंकर का विशुद्ध ज्ञान ही शरीर है, तीनों वेद ही जिनके तीन नेत्र

हैं, जो द्वितीया के चन्द्रमा को मस्तक में धारण किए हुए हैं, तथा समस्त कल्याण के हेतुभूत है, मैं उन शंकर को नमस्कार करता हूं ॥ 1 ॥

सर्वमेतद् विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥2॥

सप्तशती के पाठ करने वालों को यह कीलक सप्तशती मन्त्रों का अंग ही जानना चाहिए। अतः जो दुर्गा सप्तशती के साथ इस कीलक का पाठ करते हैं, उनका सदैव कल्याण होता है ॥ 2 ॥

सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूति सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्धयति ॥3॥

जो लोग कीलक के साथ दुर्गा सप्तशती के स्तोत्रों से भगवती की स्तुति करते हैं, उनके उच्चाटन आदि सभी क्रियाएं सिद्ध होती हैं और उन्हें दुर्लभ वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है। तथा भगवती की सिद्धि भी हो जाती है ॥ 3 ॥

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किन्चिदपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिद्धयेत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥4॥

कीलकपूर्वक सप्तशती का पाठ करने वाले पुरुष को किसी मंत्र अथवा औषधि की आवश्यकता नहीं होती। उनके द्वारा किए गये समस्त उच्चाटनादि प्रयोग

बिना जप के ही सिद्ध हो जाते हैं ॥ 4 ॥

समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशंकामिमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥5॥

अन्य मंत्रों के जापादि से भी यदि अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है और दुर्गा सप्तशती के पाठ से भी मनोरथ की सिद्धि हो जाती है तो दोनों में कौन-सा श्रेष्ठ है? लोगों की इस शंका को सामने रखकर भगवान् शंकर ने यही निर्णय किया कि दुर्गा सप्तशती स्तोत्र ही सबसे बढ़कर है ॥ 5 ॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥6॥

दुर्गा सप्तशती का यथावत् पाठ करने वाले पुरुष के पुण्य की समाप्ति नहीं होती। यह देखकर भगवान् शंकर ने दुर्गा सप्तशती के स्तोत्र को गुप्त कर दिया ॥ 6 ॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥7॥

जो कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या अष्टमी को समाहित होकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, वे निश्चय ही कल्याण के भागी होते हैं, इसमें संदेह नहीं ॥ 7 ॥

ददाति प्रतिगृहाति वाऽन्यथैषा प्रसिद्धयति ।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥8॥

जो भगवती को अपनी समस्त सम्पत्ति समर्पित कर दासरूप में पुनः उस सम्पत्ति का उपयोग करता है, भगवती उसके ऊपर निश्चय ही प्रसन्न होती है अन्यथा प्रसन्न नहीं होती। श्री महादेव जी ने इसी प्रकार के प्रतिबंधक कील से (कृष्ण पक्ष अष्टमी और चतुर्दशी को भगवती की प्रीति के लिए सारी सम्पत्ति समर्पित कर, पुनः भगवती की आज्ञा से उसका सदुपयोग करना) सप्तशती के फल को कीलित कर दिया है ॥ 8 ॥

यो निष्कीलां विद्यायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
स सिद्धः स गणःसोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥9॥

जो लोग इस प्रकार के कीलक को करके नित्य ही दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, वे सिद्ध हो जाते हैं, देवी का पार्षद तथा गन्धर्व (उत्तम गायकों की एक विशेष देव-जाति) हो जाते हैं ॥ 9 ॥

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ।
नाऽपमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥10॥

सर्वत्र विचरते रहने पर भी उन्हें कभी कोई भय नहीं रहता। उनकी अल्पमृत्यु नहीं होती और वे मर जाने पर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ॥ 10 ॥

ज्ञात्वा प्रारम्भ कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥11॥

इस कीलक को जानकर ही उसका परिहार कर, दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए। यदि कीलक को न जानकर दुर्गा सप्तशती का पाठ किया जाता है तो उसका विनाश हो जाता है। अतः कीलक (फल का विघ्न) तथा निष्कीलन (दुर्गा सप्तशती के फल के विघ्न को वारण करने की प्रक्रिया) को जान कर दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए ॥ 11 ॥

सौभाग्यादि च यत् किन्चिद् दृश्यते ललनाजने ।
तत्सर्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥12॥

स्त्रियों में सौभाग्य, सन्तति तथा स्थिर लक्ष्मी आदि जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह भगवती की प्रसन्नता का ही फल है, इसलिए भगवती को प्रसन्न करने के लिए इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए ॥ 12 ॥

शनैस्तु जाप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरूच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेवः तत् ॥13॥

इस स्तोत्र का मन्द स्वर से उच्चारण करपाठ करने से स्वल्प सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, किन्तु उच्च स्वर से पाठ करने पर तो सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। अतः उच्च स्वर से ही इसका पाठ करना चाहिए ॥ 13 ॥

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः? ॥ 14॥

जिस भगवती की प्रसन्नता से मनुष्य को ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, श्रेष्ठ सम्पत्ति, शत्रु नाश तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है, उस जगदम्बाकी स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते? ॥ 14 ॥

★ ★ ★

रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्री स्थिति-संहार-कारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥1॥

समस्त विश्व की अधीश्वरी, संसार की स्थिति, पोषण तथा संहार करने वाली, भगवान् विष्णु की अनुपमशक्तिस्वरूपा भगवती निद्रा की स्तुति ब्रह्मा जी करने लगे ॥ 1 ॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधात्वं हि वषट्कार: स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥2॥

ब्रह्मा जी ने कहा हे देवी ! तुम स्वाहा (देवताओं को हवि पहुंचाने वाली), स्वधा (पितरों को श्राद्ध, तर्पण आदि से तृप्त करने वाली) वषट्कार तथा स्वर (अकारादि), स्वरूप हो। तुम्हीं सुधा (प्राण-शक्ति को जाग्रत करने वाली), अक्षर-रूपेण विराजमान रहने वाली हो, नित्य ही तथा प्रणव में आकार, उकार, मकार आदि तीन मात्राओं से विराजमान रहने वाली हो ॥ 2 ॥

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषत: ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि ! जननी परा ॥3॥

इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त बिन्दुरूपेण विराजमान अर्धमात्र तुम्हीं हो, जिसका उच्चारण नहीं किया जा सकता। तुम्हीं संध्या तथा सावित्री हो तथा तुम्हीं पराम्बा हो ॥ 3 ॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥4॥

हे देवी, तुम्हीं इस ब्रह्माण्ड को धारण, सृजन तथा पालन करने वाली हो तथा कल्पान्त में इस सृष्टि का

संहार करने वाली हो ।। 4 ।।

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।।5।।

हे जगन्मये, तुम जगत् की सृष्टि करने के समय सृष्टि-स्वरूपा, पालन के समय स्थितिरूपा तथा संहार-काल में संहृतिरूपा हो ।। 5 ।।

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ।।6।।

हे देवी ! तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहस्वरूपा, महादेवी तथा महासुरी हो ।। 6 ।।

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रय-विभाविनी ।
कालरात्रि-महारात्रि-र्मोहरात्रिश्च दारुणा ।।7।।

सत्य, रज तथा तम गुणों को प्रकट करने वाली, सबकी प्रकृति तुम्हीं हो, भयंकर काल-रात्रि, महारात्रि भी तुम्हीं हो ।। 7 ।।

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षन्तिरेव च ।।8।।

हे मां ! तुम्हीं श्री, ईश्वरी तथा ही हो, ज्ञान देने वाली बुद्धि भी तुम्हीं हो। तुम्हीं लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति तथा क्षान्ति हो, ।। 8 ।।

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी परिघायुधा ॥9॥

तुम्हीं खड्गधारिणी, त्रिशूलधारिणी, घोरस्वरूपा, गदा, चक्र, शंख, धनुष, बाण, भुशुण्डी तथा परिध धारण करने वाली हो ॥ 9 ॥

सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
पराऽपराणां परमा त्वमेव हरमेश्वरी ॥10॥

हे मां, तुम सौम्य तथा सौम्यतर हो, संसार में जितने सुन्दर-सुन्दर पदार्थ हैं उन सबसे कहीं अधिक तुम सुन्दरी हो। पर और ऊपर से पृथक् रहने वाली परमेश्वरी भी तुम्हीं हो ॥ 10 ॥

यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वंकिं स्तूयसेतदा ॥11॥

हे जगन्मयी ! इस जगत् में जो भी सत्, असत्, वस्तु दिखाई पड़ती है उनकी शक्ति तुम्हीं हो, अतः मैं तुम्हारी क्या स्तुति कर सकता हूं ॥ 11 ॥

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावंश नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥12॥

हे मां ! जगत् की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाले महाविष्णु को भी तुमने निद्रा के वश में कर रखा

है, अत: तुम्हारी क्या स्तुति कर सकता हूं ।। 12 ।।

विष्णु: शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्तेयतोऽतस्त्वांक: स्तोतुंशक्तिमान्भवेत्॥13॥

मुझको शंकर तथा भगवान विष्णु को भी तुमने ही धारण किया है, अत: तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है ।। 13 ।।

सा त्वमित्थं प्रभावै: स्वैरूदारैर्देवि! संस्तुता ।
मोहवैतौ दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ ॥14॥

हे देवी ! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसा के योग्य हो। अत: इन दुराचार मधु, कैटभ-राक्षसों को तुम मोहित करो ।। 14 ।।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महापुरौ ॥15॥

हे माता! जगत् के स्वामी इन महाविष्णु को भी शीघ्र ही जगा दो और इनमें उन राक्षसों के मारने की बुद्धि उत्पन्न करो ।। 15 ।।

★ ★ ★

देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः स्म ताम् ॥1॥

देवताओं ने कहा देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को सदैव नमस्कार है। प्रकृति और भद्रा को नमस्कार है, हम लोग भगवती जगदम्बा को नियम पूर्वक नमस्कार करते हैं ॥ 1 ॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥2॥

रौद्रा को नमस्कार है, नित्या, गौरी एवं धात्री को हमारा बारम्बार नमस्कार है। चन्द्रिका तथा चन्द्र-स्वरूपिणी को हमारा नमस्कार है ॥ 2 ॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥3॥

हम लोग शरणागत को कल्याण वृद्धि तथा सिद्धि देने वाली भगवती को नमस्कार करते हैं। राक्षसों तथा राजाओं में लक्ष्मी स्वरूपेण वर्तमान भगवती शिवा को हम नमस्कार करते हैं ।। 3 ।।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सवकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ।।4।।

दुर्गा, दुर्गसंकट से पार करने वाली, जगत् की सारभूता, सर्वकारिणी, ख्याति, कृष्णा तथा धूम्रा को नमस्कार है ।। 4 ।।

अतिसोम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ।।5।।

अत्यन्त सौम्य तथा अत्यन्त रौद्र को हम लोग नमस्कार करते हैं। जगत् की आधारभूता तथा जगत्-कारिणी को हमारा नमस्कार है ।। 5 ।।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।6।।

जो देवी समस्त प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से कहीं जाती है, उसे नमस्कार है, नमस्कार है, उसे बार-बार नमस्कार है ।। 6 ।।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।7।।

जो देवी समस्त प्राणियों में चेतनारूप में स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उसे फिर भी नमस्कार है ॥ 7 ॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥8॥

जो देवी समस्त प्राणियों में बुद्धिरूप से स्थित है, उसको नमस्कार है, नमस्कार है तथा उसे फिर भी नमस्कार है ॥ 8 ॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥9॥

जो देवी समस्त प्राणियों में निद्रारूपेण अवस्थित है, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है, उन्हें पुनः पुनः नमस्कार है ॥ 9 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥10॥

जो देवी सभी प्राणियों में क्षुधारूपेण स्थित है, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 10 ॥

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥11॥

जो देवी सभी प्राणियों में छायारूप में स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 11 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥12॥

जो देवी सभी प्राणियों में शक्तिस्वरूप से विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है, उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 12 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥13॥

जो देवी सभी प्राणियों में तृष्णास्वरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है उन्हें नमस्कार है उन्हें नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 13 ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥14॥

जो देवी सभी प्राणियों में क्षान्ति (क्षमा) स्वरूपेण विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 14 ॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥15॥

जो देवी सभी प्राणियों में जाति रूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 15 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥16॥

जो देवी सभी प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 16 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥17॥

जो देवी सभी प्राणियों में शान्तिस्वरूप से विराजमान हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 17 ॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥18॥

जो देवी सभी प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 18 ॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥19॥

जो देवी सभी प्राणियों में कान्तिस्वरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 19 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥20॥

जो देवी सभी प्राणियों में लक्ष्मी-स्वरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 20 ॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥21॥

जो देवी सभी प्राणियों में वृत्तिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 21 ॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥22॥

जो देवी सभी प्राणियों में स्मृति रूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 22 ॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥23॥

जो देवी सभी प्राणियों में दयारूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 23 ॥

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥24॥

जो देवी सभी प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 24 ॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥25॥

जो देवी सभी प्राणियों में मातृरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 25 ॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥26॥

जो देवी सभी प्राणियों में भ्रांतिरूप से स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 26 ॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाऽखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥27॥

जो देवी समस्त प्राणियों में इन्द्रियों के अधिष्ठातृरूपेण विराजमान तथा समस्त भूतों में व्याप्त हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें फिर भी नमस्कार है ॥ 27 ॥

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥28॥

जो देवी इस समस्त संसार में ज्ञानरूप से व्याप्त

होकर स्थित हैं, उन्हें नमस्कार है, नमस्कार है तथा उन्हें बारम्बार नमस्कार है ।। 28 ।।

स्तुता सुरैः सर्वमभीष्ट-संश्रयात्
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।29।।

देवताओं ने अपने अभीष्ट की प्राप्ति हो जाने से जिनकी स्तुति की थी तथा देवराज इन्द्र ने बहुत दिनों तक जिस परमेश्वरी की सेवा की थी, परम कल्याण की साधनाभूता वह ईश्वरी हमारा मंगल करे तथा हमारी समस्त बिपत्तियों को दूर करे ।। 29 ।।

या साम्प्रतं चोद्धत-दैत्यपातितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ।।30।।

इस समय प्रचण्ड दैत्यों से सताये गये हम देवतागण जिस परमेश्वरी को नमस्कार करते हैं तथा जो भक्तिपूर्वक स्मरण किये जाने पर अपने भक्तों के संकट को तत्क्षण दूर कर देती है, वही ईशा (जगदम्बा) हमारे समस्त संकटों को दूर करे ।। 30 ।।

★ ★ ★

(दुर्गा जी का 108 नामों का स्तोत्र)

दुर्गाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि ऋणुष्व कमलानने ।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥1॥

भगवान शंकर ने कहा हे कमल के समान मुख वाली पार्वती! मैं भगवती दुर्गा के अष्टोत्तर शत अर्थात् एक सौ आठ नामों का वर्णन करता हूं, उसे तुम सावधानीपूर्वक सुनो। जिस अष्टोत्तरशत दुर्गा नाम के पाठ मात्र से सती रूपी दुर्गा अत्यन्त प्रसन्न होती हैं ॥ 1 ॥

सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥2॥

1. सती, 2. साध्वी, 3. भवप्रीता, 4. भवानी, 5. भवमोचनी, 6. आर्या, 7. दुर्गा, 8. जया, 9. आद्या, 10. त्रिनेत्रा, 11. शूलधारिणी ॥ 2 ॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः ।
मनो-बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ 3॥

12. पिनाकधारिणी, 13. चित्रा, 14. चण्डघण्टा, 15. महातपा, 16. मन, 17. बुद्धि, 18. अहंकारा, 19 चित्तरूपा, 20. चिता, 21. चिति ॥ 3 ॥

सर्वमंत्रमयी सत्ता सत्यानन्द-स्वरूपिणी ।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याऽभव्या सदागतिः ॥4॥

22. सर्वमंत्रमयी, 23. सत्ता, 24. सत्यानन्दस्वरूपिणी, 25. अनन्ता, 26. भाविनी, 27. भाव्या, 28. भव्या, 29. अभव्या, 30. सदागति ॥ 4 ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा ।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥5॥

31. शाम्भवी, 32.देवमाता, 33.चिन्ता, 34. रत्नप्रिया, 35. सर्वविद्या, 36. दक्षकन्या, 37. दक्षयज्ञ, विनाशिनी ॥ 5 ॥

अपर्णाऽनेकवर्णा च पाटला पाटलावती ।
पट्टाम्बर-परीक्षा कलमञ्जीर-रञ्जिनी ॥6॥

38.अपर्णा, 39. अनेकवर्णा, 40. पाटला, 41. पाटलावती, 42. पट्टाम्बरपरीधाना, 43. कलमजीररंजिनी ॥ 6 ॥

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।
वनदुर्गा च मातंगी मतंगमुनिपूजिता ॥7॥

44. अमेयविक्रमा, 45. क्रूरा, 46. सुन्दरी,

47. सुरसुन्दरी, 48. वनदुर्गा, 49. मातंगी, 50. मतंगमुनिपूजिता ॥ 7 ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥8॥

51. ब्राह्मी, 52. माहेश्वरी, 53. ऐन्द्री, 54. कौमारी, 55. वैष्णवी, 56. चामुण्डा, 57. वाराही, 58. लक्ष्मी, 59. पुरुषाकृति ॥ 8 ॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥9॥

60. विमला, 61. उत्कर्षिणी, 62. ज्ञाना, 63. क्रिया, 64. नित्या, 65. बुद्धिदा, 66. बहुला, 67. बहुलप्रेमा, 68. सर्ववाहन-वाहना ॥ 9 ॥

निशुम्भ-शुम्भ-हननी महिषासुरमर्दिनी ।
मधु-कैटभहन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥10॥

69. निशुम्भ-शुम्भहननी, 70. महिषासुर-मर्दिनी, 71. मधु-कैटभहन्त्री, 72. चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी ॥ 10 ॥

सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी ।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥11॥

73. सर्वासुरविनाशा, 74. सर्वदानवघातिनी, 75. सर्वशास्त्रमयी, 76. सत्या, 77. सर्वास्त्रधारिणी ॥ 11 ॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकाऽस्त्रस्य धारिणी ।

कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥12॥

78. अनेकशस्त्रहस्ता, 79. अनेकास्त्रधारिणी, 80. कुमारी, 81. एककन्या, 82. कैशारी, 83. युवती, 84 यति ॥ 12 ॥

अप्रौढ़ा चैव प्रौढ़ा च वृद्धमाता बलप्रदा ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥13॥

85. अप्रौढ़ा, 86. प्रौढ़ा, 87. वृद्धमाता, 88. बलप्रदा, 89. महोदरी, 90. मुक्तकेशी, 91. घोररूपा, 92. महाबला ॥ 13 ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥14॥

93. अग्निज्वाला, 94 रौद्रमुखी, 95. कालरात्रि, 96. तपस्विनी, 97. नारायणी, 98. भद्रकाली, 99. विष्णुमाया, 100. जलोदरी ॥ 14 ॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥15॥

101. शिवदूती, 102. कराली, 103. अनन्ता, 104. परमेश्वरी, 105. कात्यायनी, 106. सावित्री, 107. प्रत्यक्षा तथा 108. ब्रह्मवादिनी ॥ 15 ॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानाम-शताष्टकम् ।
नाऽसाध्यं विद्यते देवि ! त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥16॥

हे पार्वती! जो साधक इस एक सौ आठ दुर्गा नाम का पाठ करता है, उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं है ॥ 16 ॥

धनं धान्यं सुतं जापां हयं हस्तिनमेव च ।
चतुर्वर्ग तथा चाऽन्तेलभेन्मुक्ति च शाश्वतीम् ॥17॥

उक्त साधक धन-धान्य, पुत्र, पत्नी, घोड़ा, हाथी एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और अंत में सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है ॥ 17 ॥

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवी सुरेश्वरीम् ।
पूजयेत् परया भक्तया पठेन्नाम-शताष्टकम् ॥18॥

हे देवी! जो पहले कुमारी का पूजन कर सुरेश्वरी भगवती देवी का पूजन कर इस अष्टोत्तरशत नाम का पाठ करता है, उसे सभी सिद्धियां अवश्य ही प्राप्त होती हैं ॥ 18 ॥

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि ! सर्वैः सुरवरैरपि ।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥19॥

उस साधक के लिए राजगण सेवक बन जाते हैं, तथा उक्त साधक राज्यश्री को प्राप्त करता है। इस अष्टोत्तरशत नाम का सभी श्रेष्ठ इन्द्रादि देवगणों ने पाठ कर समस्त सिद्धियां प्राप्त की थीं ॥ 19 ॥

गोरोचना-ऽलक्तक-कुङ्कुमेन
सिन्दूर-कर्पूर मधुत्रयेण।
विलिख्य यखं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः ॥20॥

सर्वशास्त्रज्ञ भगवान् पुरारि शंकर भी गोरोचन, अलता कुंकुम, सिन्दूर, कपूर तथा त्रिमधु से इस दुर्गा यंत्र को लिखकर भुजा में धारण करते हैं ॥ 20 ॥

भौमा-ऽवास्या निशामग्रे चन्द्र शतभिषां गते ।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम् ॥21॥

इस यंत्र की शतिभिषा नक्षत्र युक्त चन्द्र तथा मंगलवार, भौमवती अमावस्या के दिन रात्रि में लिखकर जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे समस्त सम्पत्तियां प्राप्त होती हैं ॥ 21 ॥

(इति विश्वसारतन्त्रोक्त दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।)

★ ★ ★

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

शिव उवाच

श्रणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥1॥

भगवान शंकर ने पार्वती से कहा हे देवी ! मैं इस उत्तम कुञ्जिकास्तोत्र का वर्णन करता हूं। जिस कुञ्जिका मंत्र के प्रभाव से ही चण्डी (दुर्गा) पाठ का पूर्ण फल प्राप्त होता है ॥ 1 ॥

न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तंनाऽपि ध्यानं च न न्यासो न च वाऽर्चनम् ॥2॥

कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य-देवी सूक्त, रात्रिसूक्त, प्रथम, मध्यम, उत्तम चरित्र के ध्यान, न्यास, पूजन आदि जो कि दुर्गासप्तशती पाठ के लिए अत्यावश्यक हैं ॥ 2 ॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अतिगुह्यतरं देवि! देवानामपि दुर्लभम् ॥3॥

ये सभी केवल कुञ्जिका स्तोत्र के पाठ मात्र से ही दुर्गासप्तशती पाठ का फल प्राप्त होता है। हे देवी! यह कुञ्जिका स्तोत्र अत्यंत गोपनीय एवं देवताओं के लिए भी दुर्लभ है ॥ 3 ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिखि पार्वती ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठामात्रेणसंसिद्धयेत्कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ 4॥

अतः हे पार्वती ! अपने गुप्तांग के समान इसे गुप्त ही रखना चाहिए। कुञ्जिका स्तोत्र के पाठ मात्र से ही मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन तथा उच्चाटन आदि सभी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ 4 ॥

मन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।
ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय-ज्वालय
ज्वल-ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्वायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।
नमस्ते रूद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनी ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनी ॥1॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भाऽसुरघातिनी ॥2॥

मंत्र-'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' से लेकर

'हं सं लं क्षं फट् स्वाहा' तक कुंजिका मंत्र है।

कुंजिकास्तोत्र-शिवस्वरूपिणी, मधु-कैटभनाशिनी महिषासुरघातिनी और शुम्भ-निशुम्भ नाम दैत्य को नष्ट करने वाली आपको नमस्कार है ॥1-2॥

जाग्रतं हि महादेवि! जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥3॥
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्वींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥
चामुण्डा चण्डधाती च यैकारी वरदायिनी ॥4॥
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥5॥

हे महादेवी! आप मेरे जप को सिद्ध करें, आप 'ऐं' रूप से जगत् की उत्पत्ति 'ही' रूप से पालन 'क्ली' रूप से संहार करने वाली, चामुण्डा रूप से चण्ड नाम दैत्य का वध करने वाली ये स्वरूप से भक्तों को अभीष्ट वर देने वाली, 'विच्चे' रूप से अभय प्रदान करने वाली, नवर्ण मंत्र स्वरूप वाली हे जगदम्बा! आपको नमस्कार है ॥3-5॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥6॥

धां धीं धूं स्वरूप धूर्जटी (शंकर) की पत्नी, वां वीं वूं स्वरूप वाग् (वाणी) की अधीश्वरी सरस्वती, क्रां क्रीं क्रूं रूपिणी कालिका, शां शीं शूं स्वरूपिणी शांति देवी!

मेरा कल्याण करें ॥ 6 ॥

हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥7॥

हुं हुं स्वरूपवाली हुंकाररूपिणी देवी, जं जं जं रूपिणी जम्भनादिनी देवी तथा भ्रां भ्रीं भ्रूं स्वरूप वाली भैरवी, भद्रा तथा भवानी आपको बारम्बार नमस्कार है ॥ 7 ॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं
धिजाग्र त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्ण-कुञ्जिकायै नमो नमः ॥8॥

'अं कं चं टं तं०' से 'कुरु कुरु स्वाहा' तक पाठ करें। पां पीं पूं स्वरूपिणी पार्वती, पूर्णा, खां खीं खूं रूपिणी खेचरी एवं म्लां म्लीं म्लूं मूल-विस्तीर्णरूपिणी कुंजिकादेवी को नमस्कार है ॥ 8 ॥

सांसीं सूंस सप्तशतीदेव्या मंत्रसिद्धि कुरुष्व मे।

तथा सां सीं सूं स्वरूप वाली दुर्गासप्तशती के समस्त मंत्रों की सिद्धि हे देवी ! मुझे प्राप्त हो ॥8॥

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्ति हेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति! ॥9॥

इस कुञ्जिकास्तोत्र के पाठ मात्र से ही दुर्गासप्तशती

के समस्त मंत्र सिद्ध होते हैं। हे पार्वती ! इस गुप्त स्तोत्र का रहस्य नास्तिक अर्थात् शास्त्र में अश्रद्धालु जनों के लिए नहीं बताना चाहिए ॥ 9 ॥

यस्तु कुञ्जिकया देवी ! हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥10॥

हे देवी ! जो इस कुंजिका स्तोत्र के पाठ बिना दुर्गासप्तशती का पाठ करता है, उसे अरण्य (जंगल में) रोदन के समान सिद्धि प्राप्त नहीं होती अर्थात् उसका सप्तशती पाठ व्यर्थ होता है ॥ 10 ॥

इति रुद्रयामले गौरीतंत्रे शिव-पार्वती संवादे
कुञ्जिकास्तोत्र सम्पूर्णम ।

इस प्रकार रुद्रयामल-स्थित गौरीतन्त्रोक्त-शिवपार्वती संवादरूप कुञ्जिकास्तोत्र समाप्त ।

★ ★ ★

देवी प्रार्थना

देवि ! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मामर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि ! चराऽचरस्य ॥

दुर्गा-नवार्णमन्त्रा:

ॐ हीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे।

दुर्गा-गायत्री

ॐ महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

★ ★ ★

(दुर्गा जी के 32 नामों की माला)

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

दुर्गा दुर्गातिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥1॥

भगवान शंकर ने कहा

हे पार्वती! मैं भगवती दुर्गा के 32 नामों का वर्णन करता हूं, जो इस प्रकार है :–

1. दुर्गा, 2. दुर्गतिशमनी, 3. दुर्गापद्विनिवारिणी, 4. दुर्गमच्छेदिनी, 5. दुर्गसाधिनी, 6. दुर्गनाशिनी ॥ 1 ॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ॥
दुर्गम-ज्ञानदा दुर्ग-दैत्यलोक-दवानला ॥2॥

7. दुर्गतोद्धारिणी, 8. दुर्गनिहन्त्री, 9. दुर्गमापहा, 10. दुर्गम-ज्ञानदा, 11. दुर्गदैत्यलोक-दवानला ॥ 2 ॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥3॥

12. दुर्गमा, 13. दुर्गमालोका, 14. दुर्गमात्मस्वरूपिणी, 15. दुर्गमार्गप्रदा, 16. दुर्गमविद्या, 17. दुर्गमाश्रिता ॥ 3 ॥

दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यान-भासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थ-स्वरूपिणी ॥4॥

18. दुर्गमज्ञान-संस्थाना, 19. दुर्गमध्यानभासिनी, 20. दुर्गमोहा, 21. दुर्गमगा, 22. दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥ 4 ॥

दुर्गमासुर-संहन्त्री दुर्गमायुध-धारिणी ।
दुर्गमांगी, दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥5॥

23. दुर्गमासुरसंहन्त्री, 24. दुर्गमायुधधारिणी, 25. दुर्गमांगी, 26. दुर्गमता, 27. दुर्गम्या, 28. दुर्गमेश्वरी ॥ 5 ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥6॥
पठेत् सर्वभयान् मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥7॥

29. दुर्गभीमा, 30. दुर्गभामा, 31. दुर्गभा, 32. दुर्गदारिणी। जो मनुष्य मेरे द्वारा वर्णित भगवती दुर्गा के इन 32 नामों का श्रद्धा भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह प्राणी निःसंदेह समस्त भयों से मुक्त हो जाता है ॥ 6-7 ॥

इति दुर्गा-द्वात्रिंशन्नाममाला समाप्तः।

॥ श्री दुर्गा सप्तशती के सम्पुट मंत्र ॥

(सम्पुट लगाकर पाठ करने से अभिलाषित उद्देश्य का फल प्राप्त होता है)

(1) विश्व के अभ्युदय के लिए

विश्वेश्वरि त्वं परिवासि विश्वं ।
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ॥

(2) विपत्ति नाश के लिए

शरणागतदीनार्त परित्राणं परायणे ।
सर्वस्यार्ति हटे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

(3) महामारी नाश के लिए

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

(4) कल्याण के लिए

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

(5) बाधा मुक्त होकर धन पुत्रादि की प्राप्ति के लिए

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तां धनधान्य सुतान्वितं ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

(6) शक्ति प्राप्ति के लिए

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमय नारायणि नमोऽस्तुते ॥

★ ★ ★

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूं लोक फैली उजियारी ॥
शशि ललाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावे ।
दरश करत जन अति सुख पावे ॥
तुम संसार शक्ति लय कीना ।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्नपूर्णा हुई जगपाला ।
तुम ही आदि सुन्दर बाला ॥

प्रलय काल सब नाशन हारी ।
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावै ।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥
रूप सरस्वती को तुम धारा ।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा ।
परगट भई फाड़ कर खम्बा ॥
रक्षा कर प्रहलाद बचायो ।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं ।
श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीर सिंधु में करत विलासा ।
दया सिंधु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी ।
महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावती माता ।
भुवनेश्वरि बगला सुख दाता ॥

श्री भैरव तारा जग तारिणी ।
छिन भाल भव दुःख निवारिणी ॥
केहरि वाहन सोह भवानी ।
लंगुर बीर चलत अगवानी ॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै ।
जाको देख काल डर भाजै ॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला ।
जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नगरकोट में तुम्ही बिराजत ।
तिहू लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे ।
रक्त बीच शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी ।
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल काली को धारा ।
सैन सहित तुम तिहि संहारा ॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब ।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

अमर पूरी औरो सब लोका ।
तब महिमा सब रहै अशोका ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ।
तुम्हें सदा पूजें नरनारी ॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावे ।
दु:ख दरिद्र निकट नहीं आवे ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई ।
जन्म मरण ताको छुटि जाई ॥
जोगी सुर-मुनि कहत पुकारी ।
योग न हो बिनशक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आचारज तप कीनो ।
काम क्रोध जीत सब लीनो ॥
निशदिन ध्यान धरो शंकर को ।
काहु काल नहि सुमिरो तुमको ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछिताओ ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी ।
जय जय जय जगदंब भवानी ॥

भई प्रसन्न आदि जगदंबा ।
दई शक्ति नहीं कीन विलंबा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
तुम बिन कौन हरे दुख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावे ।
रिपु मूरख मोहि अति डरपावे ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी ।
सुमिरो इकचित्त तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला ।
ऋद्धि सिद्धि दै करहु निहाला ॥
जब लगि जियौ दयाफल पाऊं ।
तुम्हारो जस मै सदा सुनाऊं ॥
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै ।
सब सुख भोग परम पद पावै ॥
देवीदास शरण निज जानी ।
करहु कृपा जगदंबा भवानी ॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय अम्बे गौरी ।
मैया जय मंगल करणी मैया जय आनन्द करणी ।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ टेक ॥
मांग सिंदूर विराजत मृग मद को टीको ।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्र बदन नीको ॥ जय० ॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त पुष्प गलेमाला कंठन पर साजै ॥ जय० ॥
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवक तिनके दुःख हारी ॥ जय० ॥
कानन कुण्डल शोभित नासागृहेज मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत समज्योति ॥ जय० ॥
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर धाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥ जय० ॥
चण्ड मुण्ड दोऊ मारे शोणित बीतज हरे ।
मधु कैटभ संहारे सुर भयभीत करे ॥ जय० ॥
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय० ॥
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों ।
बाजत ताल मृदंग अरु बाजत डमरू ॥ जय० ॥
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पत्ति करता ॥ जय० ॥

भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी ।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ जय० ॥
कंचल थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रत्न ज्योति ॥ जय० ॥
श्री अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ॥ जय० ॥

श्री दुर्गा जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें,
तेरी आरती.....
तेरे भक्त जनों पर माता भीड़ पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ो मां करके सिंह सवारी
सौ-सौ सिंहों से है बलशाली है अष्ट भुजा वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। ओ मैया.....
मां बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता
सब पे करुणा दरशाने वाली अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। ओ मैया.....
नहीं मांगते धन और दौलत न चांदी न सोना,
हम तो मांगे मां तेरे मन में एक छोटा सा कोना
सबकी बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया.....

जय
मातादी
नागिनी
श्री अंबाजी यंत्र
ॐ ह्रीं
पश्चिम